REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2023

राजस्थान के प्रमुख दुर्गो का इतिहास एवं स्थापत्यकला एक अध्ययन

डॉ. माया ए. पंचाल
अध्यापक आर्टस कोलेज, पालडी, ता. दियोदर, जि. बनासकांठा.

ABSTRACT:

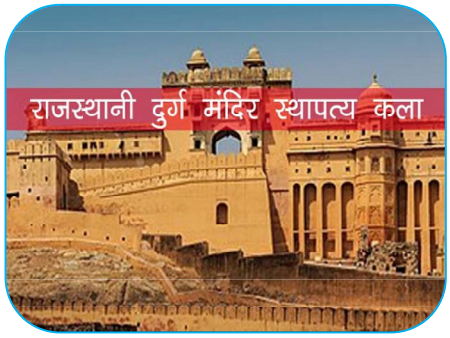

राजस्थान के दो किलों जूनागढ तथा भटनेर के इतिहास स्थापत्य कला का भरपूर निरूपण किया गया है । राजस्थान के बालुकामय प्रवेश में निर्मित बीकानेर का जूनागढ दूर्ग राठौड राजपूतो के शौर्य एवं वैभव की अनुपम कृति है और राजस्थान ही नही बल्कि भारत की उत्तरी सीमा का जो पहरेदार माना गया है वो है **भटनेर दुर्ग** भाटियों के शौर्य, वीरता, त्याग व वैभव के साथ साथ स्वयं के लुटने व फिर से आबाद होने की कहानी कहता है । दुर्ग सदैव महत्वाकांक्षी शासको एवं आक्रमणकारियों की क्रुर द्रष्टि का केन्द्र बना रहा क्योकिं दुर्ग पर अधिकार करना अथवा बनाये रखना केन्द्रीय सत्ता में बने रहेने की गारन्टी देता था. यही कारण है कि भारत के अन्य दुर्गो की तुलना सर्वाधिक आक्रमण इसी दुर्ग ने झेले है ।**यह प्राचीन दुर्ग अनेको बार लूटा व उजाडा गया व अनेकों बार इसका सेहरा सजाया गया ।** इसके साथ साथ दुर्गो की कलात्मक कृतियों हम आज भी बीकानेर जिला प्राचीन **जांगल प्रदेश** में स्थित है । जिसकी राठौड राजपूतों के शौर्य एवं वैभव की अनुपम कृति है । पत्थरो पर उकेरी गयी नक्काशी, मनमोहक चित्रकारी, पच्चाकारी जाली, झरोखें, मेहराब, बारादरियाँ आदि में कलात्मक बारीकियों को देखकर लगता है मानो कलाकार ने संपूर्ण कला कोही दुर्ग में उतार दिया है ।

KEYWORDS: राजस्थान के प्रमुख दुर्गो का इतिहबास एवं स्थापत्यकला.

प्रस्तावनाः

बीकानेर प्राचीन जांगल प्रदेश में स्थित है । जिसके उत्तर में कुरु व मद्र देश थे । जांगल देश के उत्तरी भाग पर राठौडो के अधिकार के बाद राजधानी बीकानेर बनी । वहाँ के शासक जांगल देश के वासी होने के कारण जांगलधर बादशाह कहलाया

।[1] बीकानेर नगर थार मरूस्थल का एसा नगर है जो बहुत ही प्राकृतिक प्रतिकूलताओं से त्रस्त रहा है, एसे नगर में एक गढ की कल्पना अपने आप में अनुठी है ।

यह किल्ला उत्तर पश्चिमी राजस्थान में बीकानेर जिला मुख्यालय कोट गेट से एक किमी दूर शहर के बीच भूमि तल पर बना हुआ है । शास्त्रो में वर्जित दुर्ग विधानके अनुरुप थार मरुस्थल में होने के कारण **धान्वन दुर्ग**, उपयोग आधार पर आवासीय दुर्ग तथा भूमि तल पर निर्मित होने के कारण**भूमि दुर्ग की कोटी** में रखा जा सकता है । ये किला का प्राकृतिक भागों मे बांटा जा सकता है प्रथम उत्तरी व पश्चिमी रेगिस्थान दीतीय दाक्षिणी व पूर्वी अद्रमरुस्थल । वैसे भटनेर को भी पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है । यह अर्ध्द मरुस्थलीय क्षेत्र में हडप्पा संस्कृति के महत्वपूर्ण स्थल कालीबंगा की क्षेत्रीय सीमाओं के अन्तर्गत आता है । यहाँ रंगमहल संस्कृति के अवशेष भी पाये गये है ।

यहाँ की जलवायु अर्ध्दशुष्क है तथा मौसम गर्मियों में अधिक गर्म एवं सर्दियों मे अधिक ठंडा रहता है । यहाँ की मिट्टी कैल्शियम युक्त तथा क्षारीय प्रकृति की है । बीकानेर में कई नदी बहती थी या कोई नदी नही है ओर भटनेर दुर्ग के समीपस्थल घग्गर नदी प्राचीनकाल में बहेती थी और वर्तमान में सिर्फ वर्षा काल में बहती है ।

किले का निर्माण और नामकरणः

भटनेर किले का निर्माण युवराज भूपति भाटीने ई. सन् 286 में करवाया तथा अपने पिता राजा भाटी के नाम पर इसका नाम **"भटनेर"** रखा । भटनेर का अर्थ है **"भाटियों का गढ" मुस्लिम लेखक इसे "तबरहिन्द" भी कहते है ।** और बीकानेर किले को निर्माण सम्बन्धी किंवदन्ति है कि एक भेडने अपने झुण्ड से अलग होकर एक केर की झाडी के पास मेमनों को जन्म दिया । रात में एक भेडियें ने मेमनों को मारने की कोशिश की तो भेड ने साहस से मुकाबला करके भेडियों को भगा दिया । यह देख भविष्यवेत्ताओ ने घोषणा की के यह स्थान साहसी लोंगो को जन्म देगा और यहाँ एक दुर्ग का निर्माण होगा उस पर कोई भी शत्रु विजय प्राप्त नहीं कर सकेगा ।[4]**दुर्ग का वास्तविक नाम चिन्तामणी दुर्ग है परंतु प्रसिध्धी जूनागढ नाम से है ।** लाल पत्थरों से बने इस भव्य किले का निर्माण ई. 1485 में बीकानेर के प्रतापी शासक रायसिंहने करवाया था जो मुगल बादशाह अकबर और फिर जहाँगीर का प्रमुख एवं विश्वस्त मनसबदार था। जिसकारण बीकानेर राज्यने मध्यकालिन अशान्ति में भी शान्ति एवं समृध्धि के युग का आनंद उठाया।

बीकानेर प्रमुख दुर्ग का इतिहासः

बीकानेर के संस्थापक एव बीकाजी जोधपुर के महाराणा राव जोधाजी के पुत्र थे उन्होने नये साम्राज्य की तलाश में 500 सिपाहियों एंव 100 घडसवारों की सैन्य टुकडी के साथ ई. 1465 में मारवाड छोड दिया । बीका के चाचा खाण्डलजी तथा नेपा सांखला उनके साथ थे वि.स. 1545 तदुनसार 1488 ई. में राव बीकाने इस शहर की नींव डाली[5]

जब इस बीकानेर पर आया एक बडा शंकट समये महाराजा जोरावरसिंहने इस संकट के समय एक सफेद चीलको देखकर अपनी कुलदेवी करणीजी को बडे मार्मिक शब्दों में याद किया था ।-

डाढाणी डोकर थई, का तुं गई विदेश ।
खून बिना क्यों खोसजे, निज बीका हो देश ।।

जोधपुर के राव मालदेव के आक्रमण में राव जैतसी की मृत्यु हो गयी तथा बीकानेर पर मालदेव का अदिकार हो गया। ई. 1544 में शेरशाह सूरीने बीकानेर का राज्य राव कल्याणमल को दे दिया। उसके बाद बहोत सारे उतार-चढाव आये।

भाटियों की वीरता और पराक्रम का साक्षी भटनेर का प्राचीन दुर्ग बीकानेर से लगभग 144 मील उत्तर – पूर्व में नव स्थापित जिला मुख्यालय हनुमानगढ में अवस्थित है। अपनी विशिष्ट सामरिक स्थिति और महत्व के कारण भटनेर को अपने निर्माण के बाद से ही आक्रमणकारियों के जितने प्रहार झेलने पडे उतने भारत के शायद ही अन्य किसी दुर्ग को झेलने पडे। ज्ञात इतिहास के अनुसार महमुद गजनवी ने विक्रम स्वंत 1058 (1001 ई.) में भटनेर पर अधिकार कर लिया था। 13वी शताब्दी के मध्य में गुलाम वंश के सुलतान बलबन के शासनकाल में उसका चचेरा भाई शेरखां यहाँ का हाकिम था। जिसने शक्तिशाली और खूंखार मंगोलो के आक्रमणो का सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया। एसा उल्लेख मिलता है कि उसने मंगोलों के आक्रमणों का सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया। एसा उल्लेख मिलता है कि उसने भटिन्डा और भटनेर के किलों की मरामत करवायी थी।[6]

बीकानेर के इतिहास से सम्बन्धित तवारीख "दयालदास की ख्यात" में भटनेर के किलें में घटित एक घटना का उल्लेख है। ई. 1597 में एक बार अकबर का श्वसुर नसीरखां भटनेर में आकर ठहरा। उसने वहाँ किसी महिला सेविका के साथ छेडछाड की तो रायसिंह के इशोर पर उसके सेवक जेताने नसीरखां की पिटाई कर दी। नसीरखें ने इसकी शिकायत अकबर से की। अकबर रायसिंह पर नाराज हुआ।

किले का स्थापत्यः

राजस्थान के प्रमुख दुर्गो में बीकानेर का जूनागढ दुर्ग और हनुमानगढ के भटनेर दुर्ग का समावेश करते हुए उसके स्थापत्य के बारे में बताना है।

वैसे जूनागढ दुर्ग का आकार चतुष्कोण या चतुर्भुजाकार है। इसका घेरा 1078 है। किले का कुल क्षेत्रफल 1,63,119 वर्ग गज है। दयालदास की ख्यात के अनुसार दुर्ग के पूर्व की दीवार 401 गज, दक्षिण की 403 जग, पश्चिम की 407 गज, उत्तर की 406 गज है तथा सकीत 19 गज ऊंची है। महाभायत के नीचे औसार 20 गज और गज 10 कोट व परकोटे के नीचे है। परकोटे के बाहर खाई 20 गज चौडी है। 25 गज गहरी है। इस तरह गढ का निर्माण करवाया। इस किले में प्रमुख दो प्रवेशद्वार भी है। जिसमें पूर्वाभिमुख द्वार का नाम **कर्णपाल** और पश्चिमी द्वार का नाम **चांदपोल** है। इन दोनो द्वार के अलावा और किलें में पांच आंतरिक द्वार है जो **दौतलपोल, फतेहपोल, रतनपोल, सूरजपोल** और **ध्रुवपोल** कहेलाते है। जिसमें किलें के निर्माण के समय इसका विस्तार सूरजपोल तक ही था और अन्य दरवाजें परवर्ती शासकों द्वारा बनवाये गये। जिसमे सूरजपोल पीले पत्थरों से बना है। शायद पीलें रंग का पत्थर जैसलमेर से लाया गया हो। **सूरजपोल दरवाजे पर इस किलें के संस्थापक राजा रायसिंह की प्रशस्ति उत्कीर्ण है।** जिससे उसके शासनकाल की प्रमुख घटनाओं का प्रामाणिक विवरण ज्ञात होता है।[7]

जूनागढ किला बाहर से देखने पर जितना सुदृढ है उतना ही भीतर से भव्य और सुंदर है। किले के भीतर विशाल चौक के एक तरफ आलीशान महल बने हुए है जो अपने अद्भुत शिल्प और सौंदर्य के कारण दर्शनीय है।

इनमें रायसिंह का चौबारा, फूल महल, चन्द्रमहल, गज मंदिर, अनूप महल, रतन निवास, रंग महल, कर्ण महल, दलेल निवास, छत्र महल, लाल निवास, सरदार निवास, गंगा निवास, चीनी बुर्ज, सुनहरी बुर्ज, विक्रम विलास, सूरत निवास, मोती महल, कुंवरपदा और जालीदार बारहदरियाँ प्रमुख व उल्लेखनीय है। जूनागढ के भीतर अनेक आवासीय भवन, दुर्गवासियों को जलापूर्ति के लिय **रामसर** और **रानीसर** दो जलराशि वाले कुएँ उल्लेखनीय है।[8]

वैसी ही तरह भाटियों की आन, बान, शान का पराक्रम का साक्षी भटनेर आज के वर्तमान समय में तो तूटा-फूटा हुआ नष्ट हालात में नजर आता है और बीकानेर का दुर्ग आज भी इसकी सांस्कृतिक धरोहर लिये खडा है । मरुस्थल से घिरा होने के कारण भटनेर के किले कों शास्त्रों में वर्णित धान्वन दुर्ग की कोटि में रख सकते है । इस दुर्ग के घेरे में लगभग52 बीघा जमीन है और इस किले की विशाल बुर्जे, जलराशि वाले कुएं थे और इस किले का निर्माण लोहे के समान दृढ पक्की हुई ईंटो और चूने से हुआ है आज वो किले भग्न अवस्था में है । विशालता औस सुद्रढ सुरक्षा व्यवस्था भटनेर के स्थापत्य की प्रमुख विशेषता रही है ।[9]

बीकानेर के जूनागढ किले और भटनेर किले के बीच कुछ ज्यादा फर्क तो नही दिखने मिलते किन्तु वर्तमान स्थिती में बिकानेर दुर्ग एक प्रमुख विशेषता के लिये आज भी खडा है । जिसमें दुर्लभ प्राचीन वस्तुओं, शस्त्रो, देव प्रतिमाओं, विविध प्रकार के पात्रो तथा **फारसी** व **संस्कृत में** लिखे गये **हस्तेलिखित** ग्रंथो का बहुत समृध्ध संग्रहालय है । इन सभी विशेषताओं के कारण जूनागढ दुर्ग को भारत के सौंदर्यशाली दुर्गों में उपरी स्थान दिया गया है ।[(10)] जूनागढ के सभी महलों के स्थापत्य कला **मुघल शैली** और **राजपुत शैली** दोनो का प्रभाव दिखने को मिलता है । किले के जितनी भी विशेषताए है इन किले में दिखने को मिलती है ।

भटनेर किला महत्व की द्रष्टी से मुल्तान-अच्छा से थोडा दक्षिण पूर्व में सिरसा (सुरसुती), हांसी व दिल्ली के प्रमुख मार्ग पर स्थित होने से भटनेर दुर्ग बहुत महत्वपूर्ण था । इस किले का उपयोग सुरक्षा हेतु के रुपसे सभी शासकोने अपनी प्रमुख सैन्य चौकी के रुप किया तैमुर की एक आत्मकथा **"तजुके तेमूरी"** में लिखा गया है कि उसने (तैमूर) इतना मजबूत व सुरक्षित किला पूरे हिन्दुस्तान में कहीं नहीं देखा ।[11]

सारांशः

भटनेरकिला वर्तमान में जीर्णशीर्ण अवस्था में है और जूनागढ किला वर्तमान समय में भी मौजूद है । बीकानेर का यह भव्य दुर्ग हि इतिहास, कला और संस्कृति की बहुमूल्य धरोहर का संजोग हुए है । जिसे देखने के लिए देश-विदेश के पर्यटक यहाँ आते है और भटनेर दुर्ग पूरी तरह से नष्ट हालात में हो गया है । आज उसका प्राचीन स्त्रोत में से मात्र तीन कुएँ सुरक्षित बचे हुए है । परंतु उनमें भी पानी का अभाव है । गहन अवलोकन पर किले की जल प्रवेश संग्रहवा, जल उत्थान और जल निकास प्रणाली के अवशेष मात्र ही नजर आते है । मुख्य प्रवेशद्वार के अतिरिक्त अन्य द्वार गिरने की कगार पर है ।

वर्तमान में ये भटनेर दुर्ग भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की देखरेख में है । संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन की अंतराष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल परिषद शाखाने प्रतिवर्ष अप्रेल माह की **18 तारीख को विश्वदाय दिवस** के रुप में मनाने की घोषणा की है । इस घोषणा के क्रम में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के जयपुर मंडलने अंतरराष्ट्रीय पटल पर भटनेर दुर्ग के महत्व को दर्शाने हेतु **18 अप्रेल 2010 को विश्वदाय दिवस भटनेर किला हनुमानगढ में मनाया ।** किले के बुर्जो एवं द्वारों को गिरने से बचा ने के लिए पुरातत्व विभाग इनमें मरामत कार्य भी करवा रहा है ।

मुख्य द्वार से प्रवेश करने पर ठीक सामने लगभग 100 मीटर आगे हनुमानजी का मंदिर है । ये मंदिर पुरे किले के दुरदराज के क्षेत्रो में आस्था का केन्द्र है ।

इस किले का इतिहास एवं आवश्यक जानकारी बताने के लिए लाल पत्थर पर हिन्दी अंग्रेजी में उत्कीर्ण दो आधुनिक पाषाण अभिलेख भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा लगाए गए है। जूनागढ किले कि तरह भटनेर किले का स्थापत्य रहा है । लेकिन इस दुर्ग के दायी तरफ चलने पर तीन द्वार नजर आते है । यह द्वार आपस में जुडे हुए है । लकडी के दरवाजों पर प्रथम द्वार के समान ही लोहे की चद्दरे तथा मोटी कीले लगी हुई है ।

भटनेर का यह दुर्ग, **"उत्तर भड् किंवाड"** के यशस्वी विरुद धारी भाटियों तथा राठौडों की अनेक गौरव गाथाओं के अपने में समेटे तथा अतीत की अनमोल एतिहासिक सांस्कृतिक धरोहर को संजोड, काल की क्रूर विनाशलीला से अधिक हमारी अपेक्षा से आहत हुआ अपने चतुर्दिक चमकते बालुका कणों के रुप में भाग्य की विडम्बना पर मूक हँसी हँस रहा है ।

राजस्थान के दो प्रमुख दुर्ग में बीकानेर और भटनेर दुर्ग का समावेश किया है । दोनो किले का स्थापत्य अद्भु त रहा है और दोनो किले की महेल और भटनेर दुर्ग राजनैतिक व सामारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के साथ साथ व्यापार वाणिज्य का भी प्रमुख केन्द्र था ।

संदर्भः

1. ओझा (डॉ.) गौरीशंकर हीराचंद, बीकानेर राज्य का इतिहास भाग प्रथम, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, वर्ष 1939 पृ. 3
2. डॉ. राधवेन्द्रसिंह मनोहर, राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर वर्ष 2019 पृ. 109
3. केन्स, जी.जे. निर्देशक, इण्डियन टाउन स्टडीझ बीकानेर, सीक्रेट्स ओफ इण्डिया 1934, वृतचित्र, गाउमोन्ट ब्रिटिश इन्स्ट्रक्शनल प्रोडक्शन, लंडन
4. गायत्री, बीना, बीकानेर का जूनागढ दुर्ग इतिहास तथा स्थापत्य, लघु शोध प्रबन्ध, वनस्थली विधापीठ, बनस्थली टोंक 2002, पृ. 27
5. सिंह करनी, बीकानेर राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध, आर्ट पब्लिशर्स प्रा.लि. बीकानेर 1968 पृ. 3
6. भाटी हरिसिंह भटनेर का इतिहास कवि प्रकाशन, बीकानेर वर्ष 2000 पृ. 84
7. शर्मा गोपीनाथ, राजस्थान के स्त्रोत, भाग 1, जयपुर 1973 पृ. 172
8. भनोट, शिवकुमार, जूनागढ (बीकानेर) का दुर्ग स्थापत्य एक अध्ययन, बनस्थली विध्यापीठ बनस्थली 2008 पृ. 81
9. भाटी हरिसिंह, गजनी से जैसलमेर भाटियों का पूर्व मध्यकालिन इतिहास, सांखला प्रिन्टर्स बीकानेर 1998 पृ. 529
10. मिश्र, रतनलाल, राजस्थान के दुर्ग, साहित्यगार जयपुर 2008 पृ. 17
11. भटनेर दुर्ग, हनुमानगढ पर्यटक सूचना फोल्डर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, जयपुर मण्डल, जयपुर 2010 पृ. 1-5

डॉ. माया ए. पंचाल
अध्यापक आर्टस कोलेज, पालडी, ता. दियोदर, जि. बनासकांठा.